अणजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए।
जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझूं ते तेणी दाहे।। २० ।।

अनजाने में बहुत सुख खो दिया। अब पहचान करके यह सुख कैसे जाने दूं। जो निधि (न्यामत) अनजाने में चली गयी है उसकी याद मुझे जला रही है।

इंद्रावती कहे आयत करी, एक वार तेडो अमने।
जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से कहती हैं कि एक बार मुझे बुलाओ, जिससे अत्यन्त उमंग में भरकर आऊं और आपको जीतूं।

में अनेक वार जीत्यो रे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें।
ते माटे मोसूं करो रे अन्तर, पण नाठ्या न छूटसो क्याहें।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मैंने आपको अनेक बार जीता है, यह आप अच्छी तरह जानते हो, इसीलिए मेरे से छिप रहे हो, परन्तु भागने पर भी मेरे से बच न सकोगे।

हूं जोर करीने ज्यारे आविस इहां, त्यारे तमे करसो केम।
एणे वचने इंद्रावतीए, वालोजी कीधां छे नरम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि मैं हौसला करके आ ही जाऊंगी तो तुम क्या करोगे? इन वचनों से श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को नरम कर दिया।

हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार।
ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रुदयासों भीडसे आधार।। २४ ।।

वालाजी इस समाचार को सुनकर तुरन्त बुलाने के लिए आएंगे। श्री इन्द्रावतीजी के वचन सुनते ही हृदय से लगा लेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

॥ अधिक मास ॥

राग धनाश्री

सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक वात।
आवडाने दुख तमे कां, दीधां रे निघात।। १ ।।

हे मेरे धनी! सुनो मैं अपनी आप बीती कहती हूं। इतना अथाह दुःख आपने मुझे क्यों दिया?

रुत सघली रे हूं घणूं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार।
न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार।। २ ।।

सब ऋतुओं में मैंने बहुत अधिक दुःख उठाया। हे धनी! आपने फिर भी मेरी खबर नहीं ली। पता नहीं आपने मेरे जीव को अब तक जीवित क्यों रखा? नहीं तो निश्चय ही इसे रहना नहीं चाहिए था।

सनेह वालाजीनो संभारतां, एक निस्वासे जीव जाए।
पण ए न जाणूं तमे केही विध करीने, जीव राख्यो काया मांहें।। ३ ।।

वालाजी के प्रेम की याद आते ही एक ही आह में जीव निकल जाना चाहिए, पर मैं यह नहीं जानती कि आपने किस तरीके से मुझे जीवित रखा।

ज्यारे जीव हुतो निद्रा मांहें, तेणो ते जुओ विचार।
पण ज्यारे निद्रा उडाडी धणिए, त्यारे केम रहे विना आधार।। ४ ।।

हे धनी! जब मैं नींद में थी (मुझे आपकी पहचान नहीं थी) तब तो जीवित रहा जा सकता था, परन्तु जब आपने नींद उड़ाकर अपनी पहचान करा दी तब आपके बिना जीवित कैसे रहा जा सकता है?

आपोपूं ओलखावी करी, आप रह्या अंत्रीख।
पडदा पाछा कीधां पछी, न जाणूं जीव राख्यो केही रीत।। ५ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर अपना शरीर त्याग दिया। आप अन्तरिक्ष में छिप गए। छिपने के बाद भी आपने मुझे कैसे जीवित रखा इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

नहीं तो ए निध दीठां पछी, खिण एक अंतर न खमाय।
विध सघली दीसे तम मांहें, ओवारणे इंद्रावती जाय।। ६ ।।

यह जानकारी देने के बाद एक पल के लिए जुदाई सहन नहीं होती, परन्तु आपके अन्दर सब सामर्थ्य दिखाई देती है, इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपके ऊपर बलिहारी जाती हूं।

खटरुत वालाजी रे वही गयूं, तेना थया ते बारे मास।
एवडो विरह केम दीधो रे वालैया, तमने हजी न उपजे त्रास।। ७ ।।

हे मेरे धनी! छः ऋतुएं जिनके बारह मास होते हैं, वह सब चली गईं, परन्तु आपको अभी तक डर नहीं लगता। ऐसा विरह आपने मुझे क्यों दिया?

बार मासना पख चौवीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन।
त्रणसे ने साठ वचे रात थई, तमे हजिए न सुणो वचन।। ८ ।।

बारह महीने के चौबीस पक्ष होते हैं, तीन सौ साठ दिन होते हैं और इतनी ही तीन सौ साठ रातें। यह सब बीत गए, फिर भी आप अभी तक मेरी विनती नहीं सुनते हो।

एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडी मांहें साठ पाणीवल।
एक पाणीवल मांहें साठ पल थाय, तमे एवडा रूसणा कीधां सवल।। ९ ।।

एक दिन और रात में साठ घड़ी होती हैं। एक घड़ी में साठ वल होते हैं और एक वल में साठ पल होते हैं। आप इतने अधिक नाराज होकर बैठे हो?

वलीने वसेके अपर महिनो, अधको ते आव्यो जेठ।
हवे कसने पूरो कसोटिए, तमे पारखूं लेओ छो मारू नेठ।। १० ।।

इसके ऊपर भी एक अधिक महीना जेठ (ज्येष्ठ) का आ गया। अब आप पूरी तरह से कसौटी पर कस रहे हो और मेरी पूरी परीक्षा ले रहे हो।

हूं अंग राखूं वालाजीसूं मलवा, नहीं तो ततखिण देऊं निवेड।
वली मेलो न आवे नौतनपुरि ए, ते माटे करूं छूं जेड।। ११ ।।

हे मेरे धनी! आपसे मिलने के लिए मैंने शरीर को जीवित रखा है। नहीं तो ततखिन (तत्क्षण) इसका कल्याण कर देती। नौतनपुरी में फिर मिलने का अवसर नहीं मिलेगा, इसलिए मैं देरी कर रही हूं।

वल्लभ तणो विरह में न खमाय, वलीने वसेके हमणां।
प्रमोधपुरी मांहें प्रबोध दीधो, हवे मनोरथ छे अति घणां।। १२ ।।

हे धनी! आपका विरह मुझसे सहन नहीं होता। विशेषकर अब हबसा में आपने ज्ञान दिया है। अब मेरी चाहनाएं और बढ़ गई हैं।

ते माटे हूं विरह सहूं छूं, जीव राखूं समझावी मन।
नौतनपुरी तमसूं मेलो करी, मारे सांभलवा छे श्री मुख वचन।। १३ ।।

इसीलिए मैं आपका विरह सहन करती हूं। मन और जीव को विश्वास दिलाती हूं कि नौतनपुरी में ही आप से मिलन कर आपके मुखारबिन्द से बातें सुननी हैं।

जेणी रुते मूने कीधी परदेसण, वली ते आव्यो असाढ।
हजी विछोडो न भाजो रे वाला, जीवने थई वली वाढ।। १४ ।।

हे वालाजी! जिस ऋतु में आपने मुझे परदेश दिया था, वही फिर से आषाढ़ महीना आ गया है। अभी तक आप इस वियोग को नहीं मिटाते। मेरे जीव को अत्यधिक चोटों से घाव हो गया है।

वाढ वसेके थई जोरावर, ते ऊपर दीधूं वली लोण।
अवगुण मारा तमे आण्या चितसूं, हवे खबर ते लेसे मारी कोण।। १५ ।।

वह घाव बहुत गहरा हो गया है। उस पर आपने नमक छिड़क दिया है। इस तरह से मेरे अवगुणों को आपने चित्त में रख लिया है। अब मेरी कौन खबर लेगा?

मू विलखतां तमे दया न कीधी, हवे स्यो वांक काढूं तमारो।
दिन घणां हूं रहीस तम सारूं, हवे जोजो तमे जोर अमारो।। १६ ।।

मुझे बिलखता देखकर आपको जरा भी दया नहीं आई। अब आपका क्या-क्या कसूर बताऊं? मैं बहुत दिन आपके साथ रही हूं। अब आप मेरी ताकत देखना।

आ पोहोरो छे कठण एवो, तमे थई बेठा अलगां अवल।
कलकल्यानूं इहां काम नहीं, जीतिए पोताने बल।। १७ ।।

यह समय इतना कठिन है और आप पहले से ही अलग होकर बैठ गए हो। इसलिए अब मेरे बिलखने से काम नहीं होगा। अब तो आपको अपनी ताकत से ही जीतना पड़ेगा।

केड बांधीने ज्यारे कीजे उपाय, त्यारे तमे थाओ नरम।
आपोपूं ज्यारे नाखिए आंख मीची, त्यारे तमने आवे सरम।। १८ ।।

कमर कसकर जब उपाय करेंगे तभी आप नरम होंगे। जब आंख बन्द करके आप पर न्योछावर हो जाऊंगी (अर्थात् मर जाऊंगी) तभी आपको शर्म आएगी।

इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज।
ततखिण आवीने तेडी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरी सब मनोकामना पूर्ण करो और अपनी लाज बचाओ। तुरन्त ही आकर के बुला ले जाओ जिससे मेरे हृदय की अग्नि (भभक, हरवाड़) शान्त हो जाए (दुःख निकल जाए)।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १३१ ॥

खटरुती का कलस

राग प्रभाती

वचन वालाजीना वालेरा रे लागे।
मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे।
वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकूं निरवाण रे।। १ ।।

मेरे प्रीतम के वचन मुझे प्यारे लगते हैं और मीठे लगते हैं। इसलिए मुझे चर्चा के मीठे वचन सुनाओ जो तारतम वाणी के वचन हैं। अब मैं निश्चय ही नहीं छोड़ूंगी।

सुणिया जे सुन्दर तणा रे, न मूकिए एह वचन रे।
आटला दिवस में विचार न कीधो, नव लीधूं वचन नूं धन रे।। २ ।।

श्यामाजी (सुन्दरबाई) के जो वचन सुने हैं, उनको नहीं छोड़ूंगी। इतने दिन तक न तो मैंने विचार किया था और न इन वचनों को ग्रहण ही किया था।

घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे।। ३ ।।

हे मेरे धनी! बहुत दिनों तक आपके वचनों रूपी न्यामत को नहीं पहचाना। आपने कृपा करके मेरे जीव की आंखें खोलकर यह निधि दी है।

चरचा जे श्री मुख तणी, सुंदर वाण वचन रे।
एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे।। ४ ।।

हे मेरे धनी! मैंने आपके श्रीमुख से सुन्दर वचनों की चर्चा सुनी है। अब आप खुले दिल से उन वचनों पर मेरे से वार्तालाप करो!

पेर पेरनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत।
वृज रास ने घर तणी, मूने कहो वीतक वृतांत।। ५ ।।

आप तरह-तरह से मुझे समझाओ। तरह-तरह के दृष्टांत दो। ब्रज रास और घर की बीती बातों का वर्णन करो।

आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह।
तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगते प्रीछवो वली एह।। ६ ।।

हे वालाजी! सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के लिए जो आपने आडीका (चमत्कारिक) लीला की थी उसका विचार करके मुझे अच्छी तरह फिर से समझाना।